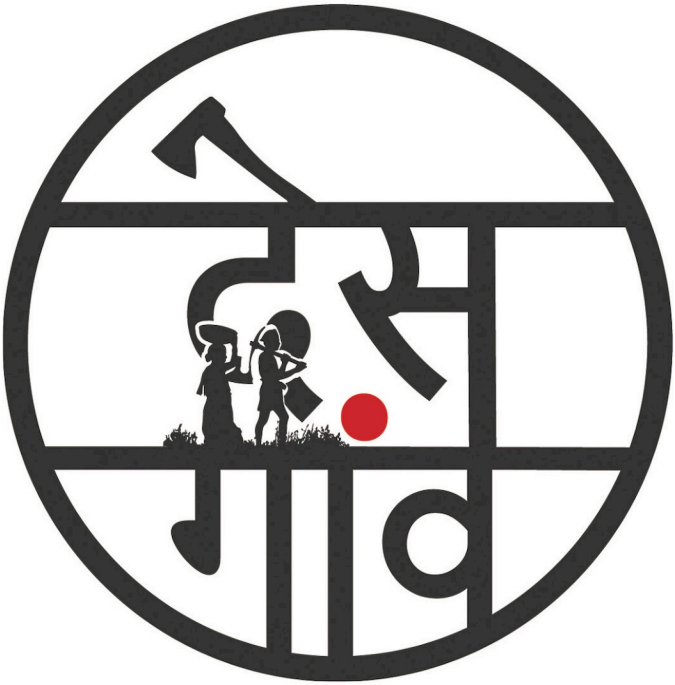

भारत के लोगों और आंदोलनों की ज़िंदा दास्तान

अभिषेक श्रीवास्तव

देसगाँव

भारत के लोगों और आंदोलनों की ज़िंदा दास्तान

अभिषेक श्रीवास्तव

अगोरा

अनुक्रम

उत्तर प्रदेश

सोन का पानी लाल है... (2015) 09

सियासत के धुँधलके में डूबता जनपद (2014) 27

हिन्दू राष्ट्र और राजपुताने की दोहरी सियासत में फंसा 'द ग्रेट चमार' (2017) 40

बुंदेलों की सूखी छाती पर ताजा घाव है सुखलाल की मौत (2016) 57

एक माता ललितपुर की, भीख माँगती, मिट्टी फाँकती (2016) 60

भुखमरी के साम्राज्य में अश्लीलता के हरे-भरे बाँध (2016) 63

महाराष्ट्र

काल तुझसे होड़ है मेरी : मराठवाड़ा (2013) 69

मध्य प्रदेश

'सत्याग्रह' की डुबकीः कहानी तीन गाँवों की(2012) 95

इंसान और ईमान का नरक कुंड (2014) 116

बेटी का सौदा करने की झूठी कहानी (2016) 132

ओड़िशा

नियमगिरि की जंग (2013) 139

गिरता पानी खंडधार, बिक गया तो रक्तधार (2016) 163

उत्तराखंड

जुल्मतों और इंसाफ के बीच ठिठकी ज़िंदगी (2015) 171

हिमाचल प्रदेश

बदलती-सुलगती देवों की धरती (2009) 181

पचास साल की नाइंसाफी और शर्म (2009) 191

राजस्थान

चुनावी साजिशों की 'रिफाइनरी' (2013) 197

पत्थरगड़ी : एक संवैधानिक विरासत का आँखों देखा इतिहास (2018) 211

पंजाब

नरेंद्रभाई, सुरैण सिंह अभी जिंदा है! (2013) 229

मीडिया पंजाब के दलितों का संघर्ष नहीं जानता (2017) 234

गुजरात

यहाँ कदम-कदम पर मोटा समढियाला बिखरे हुए हैं (2016) 241

दलित आंदोलन के ऐतिहासिक आईने में ऊना रैली का अक्स (2016) 245

नोट और संदर्भ 251

देसगाँव

भारत के लोगों और आंदोलनों की ज़िंदा दास्तान

सोन का पानी लाल है...

(2015)

एक

इस साल अक्षय तृतीया पर जब देश भर में लगन चढ़ा हुआ था, बारातें निकल रही थीं और हिंदी अखबारों के स्थानीय संस्करण हीरे-जवाहरात के विज्ञापनों से पटे पड़े थे, तब पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ घरों में पहले से तय शादियाँ अचानक टाल दी गई थीं। कई अनब्याही लड़कियों के अभागे बाप बेमौसम बरसात और ओले से बरबाद फसल की भेंट चढ़ गए, तो कई के भाई लेटी हुई गेहूँ की बालियाँ और सड़े हुए आलू देखकर सदमे में आ गए थे। खबरों की मानें तो बुलंदशहर, इटावा, बुंदेलखण्ड और मैनपुरी के किसान आगरा के पागलखाने के चक्कर लगा रहे थे। तबाही पूरब में भी हुई थी, लेकिन बनारस से सटे सोनभद्र में कहर कुदरत ने नहीं बल्कि पुलिस की लाठियों ने बरपाया था। इस इलाके में कम से कम दो शादियाँ ऐसी थीं जो अगर टली नहीं, तो उनमें रोका और कन्यादान करने के लिए लड़की का बाप नहीं आ सका।

फौजदार (पुत्र केशवराम, निवासी भीसुर) के बेटे का 22 अप्रैल को तिलक था। अगले हफ्ते उनके बेटे की शादी होनी थी। पड़ोस के गाँव में 24 अप्रैल को देवकलिया और शनीचर (पुत्र रामदास, निवासी सुन्दरी) की बेटी की शादी थी। फौजदार समेत देवकलिया और शनीचर सभी 20 अप्रैल तक दुद्धी तहसील के ब्लॉक चिकित्सालय में भर्ती थे। देवकलिया की बेटी घर पर अकेली थी। 20 की शाम को अचानक फौजदार और शनीचर को गंभीर घायल घोषित करके पाँच अन्य मरीजों के साथ जिला चिकित्सालय में भेज दिया गया जबकि देवकलिया को दस मरीजों के साथ छुट्टी दे दी गयी। देवकलिया जानती थी कि चार दिन में अगर वह शादी की तैयारी कर भी लेगी तो उसके पति शनीचर को अस्पाताल से नहीं छोड़ा जाएगा क्योंकि उत्तर प्रदेश के समाजवादी राज में अस्पताल का दूसरा नाम जेल है। समाजवाद की इस नयी परिभाषा को आए यहाँ बहुत दिन नहीं बीते हैं।

सोनभद्र उत्तर प्रदेश का दूसरा सबसे बड़ा जिला है। यहाँ की आधी से ज्यादा जमीन जंगल की है और दुनिया के सबसे पुराने जीवाश्म भी यहीं की विंध्य श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं। आदिवासी बहुल यह जिला अपने आप में इकलौता है जिसकी सीमा चार राज्यों से एक साथ लगती है - छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड और मध्य प्रदेश। पिछले पाँच महीने से अचानक इस जिले को 'विकास' नाम का रोग लग गया है। इसके पीछे पांगन नदी पर प्रस्तावित कनहर नाम का एक बाँध है जिसे कोई चालीस साल पहले सिंचाई परियोजना के तहत मंजूरी दी गयी थी। झारखण्ड (तत्कालीन बिहार), छत्तीसगढ़ (तत्कालीन मध्य प्रदेश) और उत्तर प्रदेश के बीच आपसी मतभेदों के चलते लंबे समय तक इस पर काम रुका रहा और बीच में दो बार इसका लोकार्पण भी हुआ। समय बीतने के साथ इसकी लागत भी आरंभिक 23 करोड़ रुपये से बढ़कर 2800 करोड़ रुपये हो गयी। चूंकि 2014 के लोकसभा चुनाव ने तय कर दिया था कि इस देश पर वही राज करेगा जो 'विकास' का जुमला रटेगा, लिहाजा खुद को समाजवादी कहने वाले भी इस लोभ से अछूते न रह सके। पिछले साल जिस वक्त अखिलेश यादव की सरकार ने नयी-नयी विकास परियोजनाओं का ऐलान करना शुरू किया, ठीक तभी उनकी सरकार को इस भूले हुए बाँध की भी याद हो आयी। कहते हैं कि उनके चाचा शिवपाल सिंह यादव ने इसमें खास दिलचस्पी दिखायी और सोनभद्र को हरा-भरा बनाने के नाम पर इसका काम शुरू करवा दिया। खुली निविदा के माध्यम से हैदराबाद की कंपनी हिन्दुस्तान इंजीनियर्स सिंडीकेट (एचईएस) इन्फ्रा प्राइवेट लिमिटेड को बाँध निर्माण का सौ फीसदी ठेका दे दिया गया। दिसंबर में काम शुरू हुआ तो ग्रामीणों ने विरोध करना शुरू किया। प्रशासन से उनकी पहली झड़प 23 दिसंबर 2014, को हुई। इसके बाद 14 अप्रैल, 2015 को अम्बेडकर जयन्ती के दिन पुलिस ने धरना दे रहे ग्रामीणों पर लाठियाँ बरसायीं और गोली चलायी। एक आदिवासी अकलू चेरो को छाती के पास गोली लगकर आर-पार हो गयी। वह बनारस के सर सुंदरलाल चिकित्साकलय में भर्ती है। इस घटना के बाद भी ग्रामीण नहीं हारे। तब ठीक चार दिन बाद 18 अप्रैल की सुबह सोते हुए ग्रामीणों को मार कर खदेड़ दिया गया, उनके धरनास्थल को साफ कर दिया गया और पूरे जिले में धारा 144 लगा दी गयी।

फौजदार, शनीचर और देवकलिया उन पंद्रह घायलों में शामिल सिर्फ तीन नाम हैं जिन्हें 20 अप्रैल तक दुद्धी के ब्लॉक चिकित्सालय में बिना पानी, दातुन और खून से लथपथ कपड़ों में अंधेरे वार्डों में कैद रखा गया था। प्रशासन की सूची के मुताबिक 14 अप्रैल की घटना में 12 पुलिस अधिकारी/कर्मचारी घायल हुए थे

जबकि सिर्फ चार प्रदर्शनकारी घायल थे। इसके चार दिन बाद 18 अप्रैल की सुबह पाँच बजे जो हमला हुआ, उसमें चार पुलिसकर्मियों को घायल बताया गया है जबकि 19 प्रदर्शनकारी घायल हैं। दोनों दिनों की संख्या की तुलना करने पर ऐसा लगता है कि 18 अप्रैल की कार्रवाई हिसाब चुकाने के लिए की गयी थी। इस सूची में कुछ गड़बड़ियां भी हैं। मसलन, दुद्धी के सरकारी चिकित्सालय में भर्ती सत्तर पार के जोगी साव और तकरीबन इतनी ही उम्र के रुकसार का नाम सरकारी सूची में नहीं है। इसी तरह सुन्दरी गाँव से दो महिलाएं 18 अप्रैल की घटना के बाद से ही लापता बतायी जा रही हैं जिनके बारे में तीन तरह की बातें सुनने में आयी हैं। एक स्थानीय पत्रकार नाम न छापने की शर्त पर दावे से कहते हैं कि इनकी मौत हो गयी है और इन्हें पुलिस ने मौके पर ही दफना दिया है। कुछ दूसरे पत्रकारों का मानना है कि वे दोनों 14 अप्रैल की घटना में नामजद थीं और अभी जेल में हैं। जिले के पुलिस अधीक्षक शिवशंकर यादव कहते हैं कि कोई भी लापता नहीं है, यह सब अफवाह है। पुलिस अधीक्षक की बात पर इसलिए आशंका होती है क्योंकि 14 अप्रैल की घटना में गोली से घायल अकलू चेरो के दो साथी लक्ष्मण और अशर्फी, जो अकलू के साथ बनारस तक गए थे, वे भी 20 अप्रैल तक लापता ही माने जा रहे थे जब तक कि खुद यादव ने इस संवाददाता के पूछने पर यह स्वीकार नहीं कर लिया कि वे दोनों मिजार्पुर की जेल में बंद हैं। इसका मतलब है कि जो लापता बताये जा रहे हैं वे जेल में भी हो सकते हैं। इसके अलावा 14 के हमले में घायल तीन और 18 के हमले में घायल छह ग्रामीणों (सरकारी सूची के मुताबिक) का कोई पता नहीं लग पाया है। इनमें से कुछ रॉबर्ट्सगंज के जिला चिकित्सालय में भर्ती हो सकते हैं। सूची में एक नाम 18 अप्रैल को घायल मनोज खरवार का है जो छत्तीसगढ़ के बलरामपुर का बताया गया है। अफवाह तो 18 अप्रैल को कुछ लोगों के मरने की भी थी, लेकिन यहाँ जिंदा लोगों की पहचान को लेकर ही इतना संशय है कि छत्तीसगढ़ के एक अखबार ने सोनभद्र जिले के सुन्दरी गाँव के अकलू को भी छत्तीसगढ़ का बता दिया था।

अगर आपको लगता है कि 14 और 18 अप्रैल की घटना के संबंध में दी गयी उपर्युक्त सूचनाएं अधूरी हैं, तो आप बिलकुल ठीक सोच रहे हैं। जान जोखिम में डालकर भी अगर इतने ही तथ्य निकल पाएं, तो हम समझ सकते हैं कि सच्चाई को छुपाने के लिए प्रशासन की ओर से कितना जोर लगाया जा रहा होगा। हम वास्तव में नहीं जान सकते कि बाँध की डूब से सीधे प्रभावित होने वाले गाँवों सुन्दरी, भीसुर और कोरची के कितने घरों में इस लगन में बारात आने वाली थी, कितने घरों में वाकई आयी और कितनों में शादियाँ टल गयीं। कितने घर बसने से पहले उजड़ गए